# पांच आज्ञा क्या है?

**प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,**
**पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान**

अम्बालाल मूलजीभाई पटेल के नाम से प्रसिद्ध व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करने के बाद एक सर्वज्ञ के रूप में दादा भगवान के नाम से प्रसिद्ध हुए। दादा भगवान ने एक दर्शन दिया उनका दर्शन जीवन को मोक्ष दिलाने में समर्थ है। उनका कहना था कि दादा भगवान किसी व्यक्ति का नाम नहीं बल्कि उनके अन्दर विद्यमान जो आत्मा है उसका नाम है दादा भगवान। उन्होंने अक्रम विज्ञान का उपदेश किया, उन्होने पाँच आज्ञाएं दीं। इन पाँचों आज्ञाओं का पालन करने से भव क्षीण हो जाता है। इन आज्ञाओं से संवर की प्राप्ति होती है। सम्यक् दर्शन, ज्ञान चारित्र और तप को मोक्ष मार्ग बतलाया गया है। यह ज्ञानी की कृपा से ही प्राप्त होता है। अक्रम विज्ञान कृपा का मार्ग है।

दादा भगवान के द्वारा उपदिष्ट पांच आज्ञाएं मोक्ष मार्ग हैं। इससे क्रोध, मान, माया, लोभ रूप जहर नष्ट हो जाता है। टकराव टालिए, प्रतिक्रिया विरति, एडजेस्ट एब्रीह्वेयर, कर्त्ता व्यवस्थित शक्ति, कुदरत का कानून उनके द्वारा बतलाये गये मार्ग हैं। इन मार्गों का अनुकरण करने से मनुष्य मोक्ष प्राप्त करता है। कोई छोटा नहीं, कोई तुच्छ नहीं, कोई पराया नहीं। अपनत्व और सम्मान का जितना अधिक विस्तार होगा, टकराव का विष उतना ही नष्ट होता हुआ चला जाएगा। सामाजिक संरचना के क्षेत्र में रचनात्मक कार्यक्रमों का सर्वाधिक महत्व है। समाज निश्चय ही जबर्दस्त शक्ति का भंडार होता है। शक्ति का व्यय नहीं करेगा तो व्यय होता सामर्थ्य गलत कार्यों की तरफ मुड़ जाएगा। समृद्धि का कारण मद्यपान, माँसाहार शिकार, जुआ सट्टा, परस्त्री गमन आदि पापों का सामाजिक निषेध है। कुरीतियों का समापन तो सामाजिक संगठन से शीघ्र ही बन सकता है।

आवश्यकता है समाज में जागृति लाने की। पूरे देश में सामाजिक संगठनों के माध्यम से रीतिरिवाजों में सुधार आना चाहिये। जन्म मृत्यु और विवाह ये तीन व्यवहार प्रत्येक गृहस्थ में होते ही हैं। ये ऐसे सरल और अल्पव्ययी होने चाहिये कि समाज में गरीब से गरीब व्यक्ति भी

इन व्यवहारों को आसानी से सम्पन्न कर ले। वह समाज अवश्य पतित हो जाता है जहां ये व्यवहार भारी और कष्ट साध्य हो जाते हैं।

मनुष्य सब कुछ कर सकता है। मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो धर्म, कर्म का पालन कर देवता बन सकता है। आवश्यकता है प्रतिकूल परिस्थितियों पर नियंत्रण करने की। जो व्यक्ति इस कला को जानता है, जीवन में उसकी हार नहीं होती। मानव परिवार से लेकर राष्ट्र तक अपने सम्बन्धों को बनाता है। परिवार में अनेक सदस्य होते हैं। सब की रुचि और सबका मिजाज अलग–अलग होता है। कोई उग्र स्वभाव का होता है तो कोई नम्र स्वभाव का। सभी को एक साथ रहने के लिए तालमेल बैठाना आवश्यक होता है। परिवार में एड्जेस्ट करने के लिए बड़ों का सम्मान करना पड़ता है। बड़ों का भी यह कर्त्तव्य है कि वे छोटों को आदर दें और उनके प्रति स्नेह का भाव रखे। जहां आवश्यक हो उन्हें सुझाव देकर अपनी बात को उनके सामने रखे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मानव को एक दूसरे के साथ तालमेल बैठाना होता है।

क्रम का अर्थ है– क्रमशः धीरे–धीरे आगे बढ़ना। अक्रम का अर्थ है– क्रमशः न चलकर एक छलांग में ऊंची उड़ान भरकर लक्ष्य को प्राप्त कर लेना। क्रम और अक्रम का अपना एक विज्ञान है। इस सिद्धांत को दादा भगवान ने अपने आत्म साधना के उपरान्त समाज को दिया है। आत्मारोहण करते हुए जीव मोक्ष को प्राप्त करता है। इसकी अपनी एक वैज्ञानिक पद्धति है। अक्रम विज्ञान में जीव डायरेक्ट अंतिम सीढ़ी से उच्च सीढ़ी तक पहुंच जाता है। अक्रम विज्ञान दादा भगवान का दिया गया सिद्धांत है। उन्होंने साधना के द्वारा यह देखा कि आत्मा क्षणभर में मुक्त हो सकता है। अक्रम विज्ञान आचार मीमांसा है। इसका अपना पूरा दर्शन है। भेदविज्ञान में शरीर और आत्मा को पृथक देखा जाता है। इसमें अपने भीतर शुद्ध आत्मा का दर्शन होता है।

दादा भगवान ने जीवनोपयोगी सूत्र दिया है– भुगते उसी की भूल। इस जगत में भूल किसकी चोर की या जिसका चोरी हुआ उसका? इन दोनों में से भुगत कौन रहा है? जिसका चोरी हुआ वहीं भुगत रहा है। चोर तो पकड़े जाने के बाद भुगतेगा और उसके कृत्य का दण्ड उसे मिलेगा। आज खुद की भूल का दण्ड मिल गया। खुद भुगते तो फिर दोष किसे देना। भूल है, तब तक भुगतना पड़ता है।

जब भूल खत्म हो जायेगी, तब इस दुनिया की कोई भी शक्ति भुगतने के लिये दण्ड नहीं देगी। इस संसार में यदि मानव कोई गलती करता है तो न्यायालय उसे दण्ड देता है। अपने किये गये कर्मो का कुदरती न्यायाधीश एक ही है। उसका एक ही न्याय है। उसके न्याय से पूरा जगत चल रहा है। जिसे इनाम देना है वह उसे इनाम देता है, जिसे दण्ड देना है वह उसे दण्ड देता है। जब दृष्टि निर्मल होगी तभी न्याय दिखेगा। हमारे कर्मों का लेखा–जोखा ईश्वर के पास सुरक्षित रहता है। वह सबसे बड़ा न्यायाधीश है। न्यायालयों में कभी किसी के साथ गलती हो सकती है किन्तु ईश्वर के न्यायालय में कभी गलती नहीं होती। इसीलिए कहा गया है कि हुआ सो न्याय। हमारे साथ जो कुछ भी घटनाएं घट रही हैं उन्हें समभाव से देखना चाहिए।